The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-3, October 2022
www.theresearchdialogue.com

"माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का नई तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन"

धर्मेंद्र कुमार
शिक्षक शिक्षा (शिक्षा संकाय)
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर उत्तर प्रदेश

डॉ0 विजय बहादुर यादव
(एसोसिएट प्रोफेसर)
शिक्षक शिक्षा (शिक्षा संकाय)
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर उत्तर प्रदेश

सारांश :

मानव जीवन में शिक्षा की भूमिका बड़ी महत्त्वपूर्ण है। मानव के व्यवहार में सौन्दर्य लाने का कार्य शिक्षा ही करती है। जिसकी नींव शिक्षक के हाथों में होती है। शिक्षक का कार्य एक माली के समान बड़ा ही महत्त्वपूर्ण तथा कठिन कार्य है। जिस प्रकार माली अपने कठिन परिश्रम एवं लग्न से हरे व सुन्दर पौधों के वृक्ष बनाता है उसी प्रकार योग्य व चरित्रवान व्यक्ति ही शिक्षक का कार्य पूरा कर सकता है वर्तमान युग में शिक्षा के बिना जीवन बिल्कुल अनुपयोगी है। प्राचीन समय में बालक को आरम्भ के कुछ वर्षों में परिवार के सदस्यों से शिक्षा प्राप्त होती थी उसके बाद बालक को शिक्षा ग्रहण करने के लिए किसी आश्रम में भेज दिया जाता था, जहाँ रहकर बालक अपनी शिक्षा पूरी करता था। उस समय तकनीकी और विद्यालयों जैसी कोई चीज नहीं थी। समय धीरे–धीरे परिवर्तित हुआ फिर शिक्षा के लिए विद्यालयों का निर्माण किया गया विद्यालय में बालक के लिए,

ऐसा वातावरण तैयार किया गया जहाँ वह अपने वर्तमान के साथ–साथ भविष्य की कई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयासरत रहता है।

बीज शब्द : माध्यमिक विद्यालय**,** शिक्षक शिक्षा, तकनीकी**,** सूचना तकनीकी, अभिवृत्ति ।

प्रस्तावना :

समय की धारा के साथ–साथ शिक्षण क्रिया को प्रभावशाली व आसान बनाने के लिए तकनीकी का विकास हुआ। तकनीकी का अर्थ है विभिन्न प्रकार के उपकरणों के प्रयोग द्वारा शिक्षा का विस्तार करना अर्थात् शिक्षण की प्रक्रिया में मशीनों, रेडियों टेलीविजन, टैपरिकार्डर, ग्रामोफोन, कम्प्यूटर तथा भाषा प्रयोगशाला आदि का प्रयोग किया गया। इनके प्रयोग द्वारा छात्रों में वैज्ञानिक सोच का भी विकास हुआ व शिक्षक के लिए भी शिक्षण क्रिया काफी आसान हो गयी। इनके प्रयोग से प्रभावशाली शिक्षक छात्रों के बड़े से बड़े समूह को अपने ज्ञान और कौशल से लाभान्वित कर सकता है शिक्षकों की अभिवृत्ति भी उपकरणों के प्रति काफी सन्तोष जनक सिद्ध हुई है क्योंकि उपकरणों के माध्यम से एक शिक्षक अपने शिष्यों को संचित किये गये ज्ञान को तकनीकी के माध्यम से प्रदान करना चाहता है। "एक शिक्षक अपनी अभिवृत्ति द्वारा सीमित छात्रों को ज्ञान दे सकता है परन्तु तकनीकी द्वारा दूरदर्शन, रेडियो, माइक आदि से असंख्य छात्रों को कम समय में ज्ञान दिया जा सकता है।"

यदि अब शिक्षक रेडियों, टी0वी0, पर अभिभाषण करता है तो देश तथा संसार का प्रत्येक छात्र अपने रेडियो पर उसका भाषण सुन सकता है और पूरा लाभ उठा सकता है। पत्राचार पाठ्यक्रम भी नई तकनीकी की देन है। आज भारत में ही नहीं अपितु समग्र सृष्टि पर ज्ञान का द्रुतगति से विकास हो रहा है, इन सभी स्थितियों में ज्ञानराशि में नये–नये प्रौद्योगिकीय अध्ययनों खोजों और अनुसन्धानों को प्रोत्साहित किया जा रहा है तथा जनमानस को विभिन्न क्षेत्रों को अवलोकन प्रदान कराया जा रहा है।

गत दो–तीन दशकों से शिक्षा जगत में शिक्षा तकनीकी का अतिक्षिप्रगति से प्रचार हुआ है। विद्यालयों, विश्वविद्यालयों के पाठ्यचर्या में शिक्षा तकनीकी के विविध आयामों पर सेमिनार, गोष्ठियाँ, सम्मेलन एवं वर्कशॉप आयोजित होते रहते हैं तथा नये–नये विचारों, अनुभवों व अनुसन्धानों के निष्कर्ष के आधार पर कुछ नवीन तकनीकियों ने शिक्षा को सरल, सुलभ, सर्वजनप्रिय एवं सर्वग्राही बना दिया है।

शिक्षा को तीन स्तरों में प्रदान किया जाता है। इन तीनों ही स्तरों पर वैज्ञानिक ज्ञान व आवष्कारों के माध्यम से छात्र जीवन के प्रत्येक पक्ष एवं क्रिया को प्रभावित किया गया है। इसमें शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षण मशीनों, रेडियो, कम्प्यूटर, ध्वनिमुद्रिका (Audio Cassettes), सचित्र (Video Cassettes), टेलीविजन टेपरिकार्डर, ग्रामोफोन, ओवर हैड प्रोजेक्टर (O.H.P.), L.C.D. (Liquid Crystal Diplay) तथा भाषा प्रयोगशाला आदि का प्रयोग किया जाने लगा। इन शिक्षण यन्त्रों के प्रचलन से शिक्षा प्रणाली को यन्त्रीकृत कर दिया तथा ज्ञान के संरक्षण प्रसार और अभिवृद्धि के लिए शिक्षण में सहायक सामग्री तथा मशीनीकरण का प्रयोग किया जाने लगा।

सूचना तकनीकी (Information Technology) जिसके माध्यम से विश्व में कहीं भी और कभी भी अपनी सूचना को भेजा जा सकता है तथा कहीं भी कभी भी प्राप्त किया जा सकता है। इसके माध्यम से यत्र विश्व भवेत् एकनीडम् जैसा प्रतीत होने लगा इसमें सर्वाधिक भूमिका इण्टरनेट (Internet) ने निभाई है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्वः

भारतीय शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए अनेकों शोध कार्य हुए ताकि मूल कारणों को पहचाना जा सके तथा गुणवत्ता को बढ़ाने वाले कारकों को शामिल कर शिक्षा को रुचिकर बनाया जा सकें तथा रूढ़िगत परम्परा से शिक्षा प्रणाली में आयी कमियों को दूर किया जा सकें जिससे एक सुन्दर शिक्षा व्यवस्था सुनिश्चित हो।

भारतीय शिक्षा नीति 1986 में यह महसूस किया गया कि बिना ब्लैक बोर्ड के कक्षा में अध्ययन संभव नहीं हो सकता है। अतः दृश्योपकरण के रूप में कम–से–कम ब्लैक बोर्ड

तो अवश्य हो लेकिन समय के परिवर्तन के साथ ही शिक्षा को कम्प्यूटर आदि उपकरणों से जोड़ा गया तथा सभी स्कूलों में पाठ्य उपकरणों की व्यवस्था कराई गयी।

परन्तु यह भारतीय शिक्षा का दुर्भाग्य कहे कि उपकरणों के होने पर भी उनका उपयोग नहीं हो रहा। इसका प्रमुख कारण अध्यापकों की रूढ़िवादिता, आलस्य तथा उपकरणों के क्रियान्वयन में कुशलता का अभाव है अथवा वे शिक्षक तकनीकी ज्ञान को अपनाना नहीं चाहते हैं। कुछ भी हो लेकिन इतना व्यय करने के बाद अभी भी वह प्रतिफल सम्मुख नहीं आया है जिसके माध्यम से सन्तोष का अनुभव किया जा सकें।

ज्ञान विस्फोट के वैश्विक प्रतिस्पर्धा वाले इस युग में अद्यतन रहने के लिए आज के शिक्षक को नई तकनीकी के साथ अपने को जोड़ना अनिवार्य होता जा रहा है। इस बाध्यता के फलस्वरूप प्रत्येक शिक्षक को अपने शैक्षिक कार्यों के प्रभावी नियोजन एवं सम्पादन के लिए नई तकनीकी की आवश्यकता पड़ती है।

प्रचलित शिक्षा धारा को अद्यतन बनाये रखने का दायित्व शिक्षक का है और शिक्षक नई तकनीकी से जुड़े बिना अपने में परिवर्तन, परिवर्धन तथा परिष्करण नहीं कर सकता है। अब छात्रों की रूचियों में भी परिवर्तन हो रहा है। छात्र केवल व्याख्यान विधि से पढ़ाये गये पाठ से सन्तुष्टि का अनुभव नहीं करते उनकी जिज्ञासायें अपूर्ण रह जाती हैं। उनकी सृजनात्मकता में उपयोग तथा अद्यतन ज्ञान–विज्ञान से परिचय प्राप्त कर छात्रों में रचनात्मकता, सृजनात्मकता के विकास के साथ शिक्षा ग्रहण में भी रूचि विकसित होती है। अतः नई तकनीकी के महत्त्व को शिक्षा में नकारा नहीं जा सकता।

अन्त में हम कह सकते हैं कि शिक्षक अपने शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कार्यों के प्रभावों नियोजन, क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन हेतु नई तकनीकी का प्रयोग कर सकता है जो कि उनकी इच्छा शक्ति पर निर्भर करता है। यह इच्छा–शक्ति शिक्षक की रूचि एवं अभिवृति से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है जिसे इस शोध द्वारा जानने का प्रयास किया गया है।

समस्या कथनः

''माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का नई तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''

शोध अध्ययन के उद्देश्यः

प्रत्येक संरचना या प्रक्रिया के निश्चित उद्देश्य होते हैं जिसके अनुसार सारे घटक या क्रियाएँ गतिशील रहती है। निश्चित उद्देश्य एक माला सूत्र की तरह होता है, जिससे भी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष क्रियायें अनवरत जुड़ी होती हैं। उद्देश्य का दूसरा महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि किसी भी व्यवस्था या प्रक्रिया चाहे वह मानवीय हो या भौतिक का मूल्यांकन उद्देश्य की प्राप्ति की कसौटी पर किया जाता है। किसी प्रणाली या प्रक्रिया के विषय में क्यों का उत्तर खोजना ही उद्देश्यों को जानना है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध भी एक विशेष प्रक्रिया है जिसके कतिपय उद्देश्य होना अवश्यंभावी है।

प्रस्तुत शोध के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निरूपित किए गए हैं–

(1) माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का नई तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

(2) सरकारी तथा गैर सरकारी शिक्षकों का नई तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(3) सरकारी शिक्षकों का नई तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(4) गैर सरकारी शिक्षकों का नई नकनीकी का प्रयोग के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाः

- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का नई तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

- सरकारी तथा गैर सरकारी शिक्षकों का नई तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सरकारी शिक्षकों का नई तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- गैर सरकारी शिक्षकों का नई तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन की परिसीमायें:

शोध के विस्तृत परिक्षेत्र तथा शोध प्रबंन्ध का दृष्टिकोण सीमित समय,धन एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुये शोध का परिसीमन निम्नलिखित प्रकार से निर्धारित किया गया है–

- प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश के पॉच जनपद लखीमपुर,शॉहजहॉपुर,पीलीभीत,सीतापुर,लखनऊ के माध्यमिक विद्यालयों को लिया जायेगा।
- प्रस्तुत शोध में यू0पी0बोर्ड के विद्यालयों को लिया जायेगा
- प्रस्तुत शोध में शिक्षक एवं शिक्षकाओं को लिया जायेगा।

शोध विधि:

शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया जायेगा।

जनसंख्या:

शोधकर्ता द्वारा उत्तर प्रदेश के 5 जिलों के माध्यमिक विद्यालयों के सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को शामिल किया जायेगा।

प्रतिदर्श:

शोधकर्ता द्वारा उत्तर प्रदेश के 5 जिलों के माध्यमिक विद्यालयों के 200 सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को चयन प्रतिदर्श के रुप में किया जायेगा।

प्रतिदर्शन विधिः

शोध कर्ता द्वारा यादृिच्छीकरण चयन विधि का प्रयोग किया जायेगा।

शोध अध्ययन हेतु उपकरणः

प्रस्तुत शोध में विषय की प्रकृति के अनुसार आंकड़े प्राप्त करने के लिए प्रश्नावली का चयन किया जायेगा।

आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्याः

नई तकनीकी के प्रयोग के प्रति अध्यापको का दृष्टिकोण प्राप्त आकड़ों के विश्लेष्ण हेतु शोधकर्ता द्वारा मध्यमान (mean)मानक विचलन(Standard Daviation) z परीक्षण आदि सांख्किीय प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वेस्ट जॉन डब्ल्यू : रिसर्च इन एजूकेशन, नई दिल्ली प्रेंटिस हाल, 1963।

भार्गव, महेश : आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, आगरा, 2001।

कपिल, एच0के0 : अनुसंधान विधयाँ, आगरा, हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, 1995।

राय, पी0एन0 : अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।

शर्मा, बी0एन0 : शिक्षा मनोविज्ञान, साहित्य प्रकाशन,आगरा।

शर्मा0 आर0एन0 : मापन एवं मूल्यांकन, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।

लोकेश कौल : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1998।

शर्मा, आर0ए0 : शिक्षा तकनिकी, लॉयल बुकडिपो, मेरठ, 2004।

पाठक, आर0पी0 : उच्च शिक्षा मनोवैज्ञानिक, राधा पब्लिकेशन दरियागंज, दिल्ली।

कुल श्रेष्ट, एस0पी0 : शैक्षिक तकनीकी, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।

शर्मा0 आर0ए0 : शिक्षा अनुसंधान, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।

ओबराय, एस0सी : शैक्षिक एवं तकनीकी, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, 2005।

THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-3, *October* 2022
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-Oct-2022/21

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

धर्मेंद्र कुमार एवं डॉ0 विजय बहादुर यादव

For publication of research paper title

"माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का नई तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-03, Month October, Year- 2022.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com